हवेली में स्कूल

अर्चना त्यागी

कृति को साल के तीन महीनों का पूरे साल इंतज़ार रहता था। नानी जो उनके घर पर रहती थी। नाना जबसे नानी को छोड़कर चले गए तबसे नानी छह महीने अपने घर में ही रहती और बाकि के छह महीने अपने दोनों बच्चों के पास चली जाती। इस बार सितंबर में नानी कृति के घर यानि अपनी बेटी के पास आ गई थी। कृति स्कूल से वापस आती तो नानी उसको खाना देती और ख़ुद भी उसके साथ ही खाना खाती। फिर कपड़े बदलकर बातें करते करते कृति सो जाती। जब वह अपना होमवर्क करती तब भी नानी उसके पास ही बैठी रहती। अक्सर कहती रहती "हम लोगों के ज़माने में मोबाइल नहीं था और टीवी पर भी बस दूरदर्शन ही चलता था इसलिए मुझे इन सबकी आदत नहीं है। मुझे तो अपने बच्चों के साथ बैठना और बातें करना पसंद है।" कृति के मम्मी पापा तो जैसे उनके आने पर उसे भूल ही जाते थे। दोनों अपने अपने काम में व्यस्त रहते। नानी के सामने तर्क देते।

"कृति को अपनी नानी के अलावा किसी और का साथ पसंद नहीं है इसलिए हम अपनी एक टीम बना लेते हैं और कृति को उसकी नानी की टीम में रहने देते हैं। उनका भी समय खुशी खुशी बीत जाता है।"

नानी और कृति अपनी टीम में मस्त रहते। एक दिन जब कृति स्कूल का होमवर्क कर रही थी तो नानी ने देखा कि वो एक सुंदर सा कार्ड बना रही है। कार्ड बनाकर कृति ने नानी को दिखाया। उन्होंने तुरंत पूछा।

"बहुत ही प्यारा कार्ड है। किसे दोगी बेटा ?" कृति ने खुश होकर उत्तर दिया।

"मेरी सबसे अच्छी वाली मैम, अंशु मैम के लिए।" इतना कहकर उसने नानी से प्रश्न किया।

"नानी आप जब पढ़ते थे तो आपकी भी तो कोई फेवरेट टीचर रही होगी ना। कुछ बताओ ना उनके बारे में।" नानी ने थोड़ी देर सोचकर बताया कि उनकी एक ही टीचर थी और उनका नाम भी बड़ा अज़ीब सा था ,"लंगड़ी बहनजी।" नानी की बात सुनकर कृति को हंसी आ गई।

"आप सच बोल रही हैं, नानी ?" नानी अपने बचपन की यादों में खो चुकी थी। वो बताती जा रही थी।

"कितनी विद्वान औरत थी लेकिन भगवान ने एक पैर छोटा बनाया था। अच्छे घर में पैदा हुई थी इसलिए उन्होंने उन्हे पढ़ने से नहीं रोका।" कृति को थोड़ा बुरा लगा नानी की फेवरेट टीचर के बारे में सुनकर।

"आगे भी बताइए नानी।" कृति ने भोलेपन से पूछा।

"पांचवी तक सब विषय ख़ुद ही पढ़ाती थी और शाम को अपनी हवेली पर बुला लेती थी, सब कुछ याद करवाने के लिए।" कृति ने फिर नानी से पूछा।

"उनको अपने घर का काम नहीं करना होता था?"

नानी को कृति के भोलेपन पर हंसी आ गई। उन्होंने बताया। ,"बहनजी के पैर के कारण उनकी कहीं शादी नहीं हो पाई। वो अपने दादा की हवेली में ही रहती थीं। वैसे तो उस जमाने में लड़कियों

को कोई जायदाद नहीं देता था पर फिर भी उनके पिता ने हवेली का आधा हिस्सा उनके नाम कर दिया था।" नानी प्रवाह में बोल गई बिना यह सोचे कि कृति को दस साल की उम्र में इतनी बड़ी बातें कैसे समझ में आएंगी। कृति के हाव भाव देखकर उन्होंने बताया।

"उनके पिता ने अपनी हवेली को ही हमेशा के लिए उनका घर बना दिया। ताकि उनके जाने के बाद भी बहनजी को कोई परेशानी नहीं हो और वो आराम से हवेली में रहकर बच्चों को पढ़ाती रहें।" इस बार कृति को बात समझ में आ गई। उसने भोलेपन से कहा।

"उनके पापा, नाना के जैसे ही भगवान जी के पास चले गए होंगे।" नानी ने हां में सिर हिलाया। कृति की मासूमियत भरी बात सुनकर उन्हें बहुत अच्छा लग रहा था। उन्होंने आगे बताया।

"फिर मेरी शादी हो गई लेकिन जब भी अपने घर में वापिस जाती थीं उनसे ज़रूर मिलने जाती थी। वो पहले की तरह ही खुश रहती थी और बच्चों को पढ़ाना तो उन्होंने ज़िंदगी भर नहीं छोड़ा।" कृति बड़े ध्यान से सब सुन रही थी। उत्सुकता से बोली।

"नानी, अभी वो हवेली है आपके गांव में ?" नानी को हंसी आ गई। उन्होंने बताया।

"हां बेटा, हवेली के खंडहर अभी भी हैं। गांव वालों ने सोचा है कि चंदा इकट्ठा करके बहनजी की याद में एक स्कूल खोलेंगे उनकी हवेली में।" कृति की आंखें उत्साह से चमक रही थी।

"मैं भी आपके साथ उस स्कूल को देखने जाऊंगी। मुझे भी हवेली को देखना है।" कृति को ज़िद करते देख नानी बोली।

"हां, इस बार तुम्हारी छुट्टियां होंगी तो ज़रूर तुम्हे अपने गांव लेकर जाऊंगी।"

शिक्षक दिवस पर कृति के स्कूल में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सभी बच्चों ने अपने प्रिय शिक्षक के विषय में बातें की। कृति की कहानी सबको बहुत पसंद आई। उसने अपनी नहीं बल्कि अपनी नानी की प्रिय शिक्षिका "लंगड़ी बहनजी" की कहानी सबको सुनाई।